B.A. History Hons, Part-I
Paper: II, Unit-IV, Date: 08.07.2020
Lession: पूँजीवाद का उदय

पूँजीवाद का उदय सामान्यतः उस आर्थिक प्रणाली या तंत्र को कहते हैं जिसमें उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व होता है। इसे कभी-कभी "व्यक्तिगत स्वामित्व" के पर्यायवाची के तौर पर भी प्रयुक्त किया जाता है यद्यपि यहाँ "व्यक्तिगत" का अर्थ किसी एक व्यक्ति से भी हो सकता है और व्यक्तियों के समूह से भी। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि सरकारी प्रणाली के अतिरिक्त अपनी तौर पर स्वामित्व वाले किसी भी आर्थिक तंत्र को पूँजीवादी तंत्र के नाम से जाना जा सकता है। दूसरे शब्दों में ये कहा जा सकता है कि पूँजीवादी तंत्र लाभ के लिए चलाया जाता है, जिसमें निवेश, वितरण, आय उत्पादन मूल्य बाजार मूल्य इत्यादि का निर्धारण मुक्त बाजार में प्रतिस्पर्धा द्वारा निर्धारण होता है।

पूँजीवाद एक आर्थिक पद्धति है जिसमें पूँजी के निजी स्वामित्व उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत नियंत्रण, स्वतंत्र औद्योगिक प्रतियोगिता और उपभोग्य द्रव्यों के अनियंत्रित वितरण की व्यवस्था होती है। पूँजीवाद की कभी कोई निश्चित परिभाषा स्थिर नहीं हुई, देश काल और नैतिक मूल्य के अनुसार उसके भिन्न-भिन्न रूप बनते रहे हैं।

इतिहास

पूँजीवाद का इतिहास मनुष्य के इतिहास जितना ही पुराना है, प्राचीन मिस्र, कार्थेज, रोम बेबिलोनिया और यूनान में व्यक्तिगत संपत्ति और एकाधिकार पर आधारित समाजों का इतिहास मिलता है। दासप्रथा जैसे निजी स्वामित्व की चरम स्थिति रही है। मध्यकाल में यूरोप में इसका अधिक विकास हुआ; 21वीं शताब्दी के पश्चात् पूँजीवाद ने संसार के अनेक भागों में सामंतशाही और वाणिज्यवाद के बीज बोए। आधुनिक युग के आरंभ में व्यापारिक पूँजीवाद ने अपने विकासक्रम में औद्योगिक पूँजीवाद को जन्म दिया, जिसे पूँजीत्पादन पूँजीवाद भी कहा जाता है।

पूँजीवादी आर्थिक तंत्र को यूरोप में संस्थागत ढाँचे का रूप सोलहवीं सदी में मिलना आरंभ हुआ, हालाँकि पूँजीवादी प्रणाली के प्रमाण प्राचीन सभ्यताओं में भी मिलते हैं।

एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक "द वेल्थ ऑफ नेशंस" (1776) में प्राकृतिक आधार पर आर्थिक स्वतंत्रता की बात कही है, उसने पूँजीवाद का नाम नहीं लिया है। आर्थिक मामलों में प्राकृतिक स्वतंत्रता को आधार मानकर चलने के सम्बन्ध में उसका विश्वास था, जैसा कि अन्य उदारवादियों का भी मत रहा है, कि यदि आर्थिक व्यापार को किसी भी नियंत्रण से मुक्त क्रियान्वित होने दिया जाए, तो इस स्थिति में उत्पादन वृद्धि अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाएगी, तथा सर्वकल्याणकारी राज्य की स्थापना में सहायता मिलेगी। एडम स्मिथ

18वीं सदी में यूरोप की औद्योगिक क्रांति के साथ पूँजीवाद को नया बल मिला। उसके प्रभाव से 1770 और 1840 के मध्य आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। पूर्वकालीन सारी सभ्यताएँ शोषित सर्वहारा के श्रम की नींव पर बनी थीं। आधुनिक सभ्यता मानवीय आविष्कारों और यांत्रिक शक्ति द्वारा निर्मित हुई है। यांत्रिक उपकरणों की सहायता से मनुष्य की उत्पादन क्षमता में अत्यधिक वृद्धि हुई और निजी उद्योगों में इस उत्पादन-क्षमता-वृद्धि के उपयोग ने पूँजीवाद के विकास को अत्यधिक बल दिया।

पूँजीवाद का सिद्धांत सबसे पहले औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप कार्ल मार्क्स के सिद्धांत की व्याख्या के संदर्भ में आया। 19वीं सदी में कुछ जर्मन सिद्धांतकारों ने इस अवधारणा को विकसित करना आरंभ किया जो कार्ल मार्क्स के पूँजी और ब्याज के सिद्धांत से हटकर था। बीसवीं सदी के आरंभ में मैक्स वेबर ने इस अवधारणा को एक सकारात्मक ढंग से व्याख्यित किया। शीत युद्ध के दौरान पूँजीवाद की अवधारणा को लेकर बहुत बहस चली।

पूँजीवाद का प्रभाव एवं प्रतिक्रिया

औद्योगिक क्रांति के आरंभिक दिनों में इंग्लैंड में ऐडम स्मिथ का अहस्तक्षेप का सिद्धांत वैयक्तिक स्वतंत्रता और अनियंत्रित आर्थिक व्यवस्था का आधार बन गया। किंतु इन औद्योगिक परिवर्तन से उत्पन्न परिस्थितियों ने सरकार को उद्योगपतियों और श्रमिकों की समस्याओं में हस्तक्षेप करने को बाध्य कर दिया। इन्हीं दिनों समाजवाद शब्द का प्रयोग प्रथम बार हुआ। इस स्थिति में तथाकथित स्वतंत्र उद्योग, 18वीं सदी के उदारतावाद और आज के समाजवादी नियंत्रण का समन्वित रूप होगा। अमेरिकी पूँजीवाद व्यापार में व्यक्तिगत आधिपत्य और राजकीय संचालन का मिश्रित रूप है। कंपनी ट्रस्टीशिप और पब्लिक एजेंसी जैसे अनेक संगठनों ने प्रतिद्वंद्विता के सिद्धांत को विकृत कर दिया है।

राष्ट्रीयकरण की योजनाओं से नियंत्रण की मात्रा में वृद्धि हुई और स्वतंत्र अर्थव्यवस्था को जबर्दस्त धक्का लगा। व्यवस्था के निर्णय, उपलब्ध श्रमशक्ति और आर्थिक स्रोतों पर निर्भर करते हैं। राज्य प्रतिनिधियों और योजनाविदों के समक्ष उत्पादन के रूप में मात्रा और तरीके आदि के प्रश्न रहते हैं। समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत इनके लिए लक्ष्यों और सरकार द्वारा नियुक्त योजना समितियाँ द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत एक व्यक्ति या समूह को अपने आर्थिक नियोजन का स्वतंत्र अधिकार रहता है।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक इतिहास विभाग